रात्रि क्लास 27/11/68 ओम शान्ति शिवबाबा याद है?

बाप तो समझाते हैं जैसे कर्म करेंगे, वैसे देख और भी करेंगे; क्योंकि यह अथॉरिटी बहुत बड़ी है। इतना हौसला नहीं होता है रिगार्ड रखने की। शिवबाबा कितना ऊँच है। वह इस शरीर में है तो सही ना। यह कर्म करने वाला है। तो पहले-2 सावधान इनको रहना पड़ता है। इनको बाप का रिगार्ड रखना है। मंज़िल बड़ी भारी है। हमारा मोस्ट बिलवेड बाबा है। हमको नॉलेज पढ़ाते हैं। धर्मराज भी साथ में है। तो जितना रिगार्ड रखना चाहिए वह नहीं रहता। साधारण रहते हैं। तो रिगार्ड रखने की हिम्मत नहीं। बहुत साधारण है ना। अच्छे-2 जिनको बाबा महावीर कहते हैं। बाबा देख रहे हैं अच्छे-2 बड़े-2 भी रिगार्ड रख नहीं सकते हैं। बाबा कब सभी के लिए तो कहते नहीं हैं। बाबा को देखने से ही शिवबाबा की याद आनी चाहिए; परन्तु साधारण होने कारण माया वह रिगार्ड रखने नहीं देती। फिर भी दुश्मन है ना। है खेल। दुश्मन आदि की बात नहीं। बाप ने समझाया है यह ड्रामा का खेल है जिसको साक्षी हो देखना है। बाप कहते हैं ऊँच पद पाने की कोशिश करो। इस समय यहाँ गोप बहुत अच्छे चल रहे हैं। बड़ी सम्भाल रखनी है। अपने भाग्य को सराहना चाहिए ना। जो जैसा करेंगे वैसा पावेंगे। अच्छा रिगार्ड देंगे तो 21 जन्म लिए अच्छा रिगार्ड पावेंगे। बाबा तो लिखते हैं ना सदैव जीते रहो बच्चे। माया कहाँ खलास न कर देवे। कदम-2 पर जितना बाप को याद करेंगे उतना ही ऊँच। बाप से वर्सा पूरा पाना चाहिए। बाबा तो हमेशा कहते हैं ड्रामा बिल्कुल ठीक चल रहा है। सिर्फ अपने ऊपर रहम कर कोशिश कर राजाई तिलक लायक बनना है। अपने .... पूछना पड़ता है मैं राज तिलक लायक हूँ? बाप से पूछेंगे भी वही जो कुछ करते होंगे। पूछते थे बाबा हम माला में आवेंगे? अभी बाबा क्या बतावेंगे! अभी तो पुरु॰ करना है। माया कम नहीं है। यहाँ सेफ है। बाहर बम्बई में तो कोई रहे। बम्बई है गिराने की। बायस्कोप आदि तो बहुत ही गंदे हैं। यज्ञ सेवा का भी बहुत बड़ा फल है। यज्ञ की जो सर्विस करते हैं वह प्रिय बहुत लगते हैं। मनसा, वाचा, कर्मणा सर्विस है ना। बाबा ने बच्चों का नाम ही रखा है साहबज़ादे और साहबज़ादियाँ। प्रिन्स-प्रिन्सेज़ की कॉलेज होती है। उनके भेंट में तो तुम बहुत ऊँच हो। तुम सच 21 जन्म लिए बनते हो। वह तो एक जन्म लिए बनते हैं। तुम 21 जन्मों के लिए बनते हो। वह प्रिन्स-प्रिन्सेज़ हैं, पढ़ते हैं। तुम 21 जन्म लिए बनते हो। तुम ब्राह्मणों-ब्राह्मणियों जैसा महान भाग्यशाली कोई हो नहीं सकता। जिनको स्वयं परमात्मा पढ़ाते हैं। ऐसे बाप के बच्चों की चलन कितनी आलीशान होनी चाहिए। पद भी आलीशान लेने वाले हैं। बाहर में जाने से गर्म हवा माया की लगती है। लैस(लेश) आती ज़रूर है। भल सर्विसएबुल बच्चे हैं। तुम भी जितना यहाँ याद की यात्रा में रहेंगे उतना बाहर में नहीं रह सकेंगे। एक ही मन्मनाभव का महामंत्र है कमाई करने का। बाकी सभी है गंवाने का। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार, गुडनाइट और नमस्ते।

सूचना :– दिल्ली, कमलानगर में बापदादा के डायरैक्शन प्रमाण कुमारियों का ट्रेनिंग क्लास दिसम्बर मास में खुल रहा है, जिसमें :–

1.भाषण।
2.म्युज़ियम, प्रदर्शनी सर्विस।
3.जिज्ञासुओं की हैंडलिंग, उन्नति और उनकी समस्याओं का हल।
4.जनरल नॉलेज।
5.क्लास कराना।
6.योग और धारणाएँ।
7.बापदादा और दैवी परिवारों के साथ संबंध और नियमों को जानना।
8.सेन्टर पर मनसा, वाचा, कर्मणा, हर प्रकार की देख-रेख।

आदि-आदि पर ट्रेनिंग दी जाएगी। जिस भी कुमारी की शुभ इच्छा है वह कमला नगर से फार्म मंगाकर जल्दी से जल्दी दिसम्बर मास के अंदर फार्म भरकर भेजना है।